आज के परिप्रेक्ष्य में भेल संहिता का महत्व

डॉ. सुमन शाक्य*, डॉ. मनोहर राम**, डॉ. रामनिहोर तपसी जैस्वाल***

सारांश **(Abstract)-**

आयुर्वेद विश्व का सबसे प्राचीन शास्त्र है। आयुर्वेद को अन्य चिकित्सा पद्धतियों का जन्म दाता भी कहा जाता है। आयुष्य विषयक संपूर्ण ज्ञान को आयुर्वेद कहा जाता है। पुनर्वसु आत्रेय ने आयुर्वेद का उपदेश अपने 6 शिष्यो-अग्निवेश, भेल, जत्रुकर्ण, पाराशर हारीत, क्षारपाणी को दिया। जिनमें आचार्य भेल ने भेल संहिता का निर्माण किया। इस अध्ययन का लक्ष्य भेल संहिता में वर्णित महत्वपूर्ण अंशों पर प्रकाश डालना है जिससे मनुष्य को इस संहिता में छिपे हुए अंशों का लाभ प्राप्त हो सके। भेल संहिता आयुर्वेद के महत्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रंथों में से एक है। यह मध्यकालीन के कई विद्वानों द्वारा उद्धत भी किया गया है। इसके उत्तराधिकारियों द्वारा संशोधित न किए जाने पर भी इस ग्रंथ ने अपनी मौलिकता को निरंतर बनाए रखा है। भेल संहिता की पांडुलिपि के महत्वपूर्ण संस्थानों के अतिरिक्त, प्राचीन काल या आधुनिक समय के किसी भी आचार्य ने भेल संहिता की विशेषताओं को महत्व नहीं दिया।भेल संहिता के कुछ अध्याय अप्राप्त हैं किंतु उपलब्ध संहिता से प्राप्त वर्णन भी अवलोकनीय हैं। आचार्य भेल ने अनेक औषधियों पर अनुसंधान कार्य किए हैं। औषधीय तथा योगों के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा जिसका आज चिकित्सीय उपयोग हेतु, सैद्धांतिक अध्ययन हेतु, तथा अन्य समकालीन आयुर्वेद ग्रंथों के साथ तुलनात्मक अध्ययन मे सहायक सिद्ध हो सके।

कुंजिका (keyword) - भेलाचार्य, भेल संहिता, विशेषताएं

Conflict of Interest : Non Ethical Clearance : N/A

प्रस्तावना -

भेल संहिता आचार्य भेल द्वारा लिखी गई एक उत्कृष्ट रचना है भेल संहिता आयुर्वेद के समय के प्रमुख ग्रंथों में से एक है। भेलाचार्य जो आत्रेय के 6 शिष्यो में से एक थे। जिसमें प्रथम स्थान पर महर्षि अग्निवेश का नाम आता है तथा दूसरे स्थान पर आचार्य भेल का ही नाम दृष्टिगोचर होता

* एम. डी. स्नातकोत्तर छात्रा (वाचस्पति) संहिता एवं सिद्धांत विभाग राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी, Mob. No. 9058145068, email.id – sumanshakya633@gmail.com

** एम. डी. (आयु.), रीडर / विभागाध्य राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी

*** प्रवक्ता, एम. डी., संहिता एवं सिद्धांत विभाग, एम. ए. (संस्कृत) राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी

है। महर्षि अग्निवेश ने अपने ग्रंथ अग्निवेश तंत्र की रचना सबसे पहले कर दी हो और इसके पश्चात आचार्य भेल ने भेल संहिता का निर्माण पूरा किया। यही कारण है कि चरक संहिता की तुलना में भेल संहिता का प्रचार कम हुआ। भेल संहिता गुरु-शिष्य के बीच प्रश्न उत्तर की शैली में नहीं लिखी गई जैसा कि अन्य संहिता में पाया जाता है भेल संहिता का अध्ययन आयुर्वेद के विद्वानों,इतिहासकारों और संस्कृत कर्मियों के लिए महत्वपूर्ण है। जिससे वह भेल के साथ-साथ अग्निवेश काल की प्रचलित पारंपरिक प्रथाओं, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति तथा धार्मिक प्रथाओं को समझ सके। भेल संहिता की सामग्री को कम करके नहीं आंका जा सकता।

आचार्य भेल का कार्यक्षेत्र :-

आचार्य भेल की कर्मभूमि ईरान, अफगानिस्तान, पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत, बलूचिस्तान, राजस्थान, कश्मीर, हरियाणा, पंजाब का क्षेत्र रहा है। चीन के कुछ भाग पर भी भेल का प्रभाव प्रतीत होता है। भेल के कार्य क्षेत्र का केंद्र स्थल गांधार है जिसे आजकल कांधार के नाम से जाना जाता है। भेलाचार्य के नाम पर मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी पर 'भेड़ाघाट' नामक जलप्रपात इस बात का साक्षी है कि उन्होंने इस स्थान पर रहकर उस समय के वन औषधियों से परिपूर्ण तटवर्ती वन प्रदेश की वनौषधियों पर अनुसंधान कार्य किया। आचार्य भेल औषध मिश्रण में निपुण थे। आचार्य भेल का काल- 100 BC से 400 BC माना जाता है।

संहिता की विशेषताएँ :-

आचार्य भेल को औषधियों की मिश्रणों की मात्रादि के संबंध में स्वतंत्र अनुभव है। आचार्य भेल ने किस समय किस द्रव्य को खाया जाए इसका कारण भी बताया है।

आचार्य भेल के अनुसार- त्रिफला का सेवन (हरण,विभितक,आमला) भोजन के पूर्व आमले का फल खाना चाहिए। आमले का फल काषाय रस होने से कफ को शांत करता है। अम्लरस वाला होने से वायु का शमन करता और मधुर रस होने से पित्त को शांत करता है। भोजन उपरांत हरण का सेवन करना चाहिए हरण पित्ताशय में मूर्छित पित्त को क्षण भर में उत्तेजित कर फिर शांत कर देता है। आहार के पचने पर पित्त तथा कफ की वृद्धि होती है अतः दोनों के शमन की इच्छा से विभितक को भोजन के पच जाने पर खाना चाहिए।[1]

भेल ने भी विसूचीरोग की चिकित्सा का विस्तार से वर्णन किया है। सर्वप्रथम उष्ण लवणाम्बु पिलाकर रोगी को वमन कराना चाहिए तथा कारक कषाय अनार का रस अथवा अर्जुन क्वाथ पिलाना चाहिए।[2]

कुछ द्रव्यों के विशेष गुण-

द्रव्य	विशेष गुण
माष	बहूमल उत्पादक
दधि	श्लीपद कारक
पिण्याक	ग्लानि कारक
तक्र	क्षपण कारक
मधु	संधान कारक
सुरा	जर्जरी कारक
हरेण व मसूर	अत्यधिक वातकारक
मूलक	कफकारक
लशुन	वातनाशक,पित्तश्लेष्मकारक

कुलक के अतिरिक्त सभी तिक्त द्रव्य एवं यव व गौधूम के अतिरिक्त सभी पैष्टिक द्रव्यों को अवृष्य माना है।[3] अनुपान का बृहत वर्णन करते हुए प्रत्येक प्राणी के मांस का, प्रत्येक द्रव्य का,व प्रत्येक शाखा का पृथक अनुपान बताया है। जैसे-

भेड़ का मांस खाने के बाद शीत कषाय।

हायन एक प्रकार का चावल है जिसे खाने के बाद जल सेवन।

सूअर का मांस खाने के बाद खदिरोदक पान इत्यादि।[4]

ऋतु के अनुसार द्रव्य विशेष सेवन[5]

वर्षाऋतु में मधु सेवन

शरद ऋतु में घृत सेवन

शिशिर ऋतु में वारूणी,गंण्डक

वसंत ऋतु में माद्वीक

ग्रीष्मऋतु में दूध का सेवन

ज्वर के संदर्भ में ग्यारह प्रकार की चिकित्सा का निर्देश किया है-[6]

स्वेद कर्म	7- वटिका
कषाय	8- मोदक
लेह	9- पाचन
चूर्ण	10- दुग्ध
प्रदेह	11- सर्पि
सेक	

गृध्रसी में सहचरतैल एवं मूलकतैल के अभ्यांतर प्रयोग के साथ रक्तमोक्षण को भी प्रशस्त माना है। इन तैलों का उपयोग भोजन,पान,स्नेहन,तथा अभ्यंग के साथ बस्ती कर्म में भी करना चाहिए।[7] गर्भिणी में सातवें महीने में वात पित्त कुपित होकर उर में जलन तथा खुजली उत्पन्न करते हैं जिसे किक्किस रोग के नाम से जाना जाता है इस पर त्रिफला चूर्ण को खरगोश के रक्त में मिलाकर लगाना चाहिए ।[8]

कुछ प्रमुख योग-

योग	**रोगाधिकार**
अश्वत्थमूलादि मोदक	राजयक्ष्मा9
पिप्पली वर्धमान	राजयक्ष्मा10
शतपाक मधुक तैल	राजयक्ष्मा10
दशांग घृत	गुल्म 11
दाधिक घृत	गुल्म 11
शिवा वर्ति	विसूचिका12
सुवर्ण समकचूर्ण	उदर रोग13
प्राणदा वाटिका	अर्श14
अयोरजीयम्	शोफ15
हिंगु पंचमम्	हृदय रोग
वल्लभ घृतम्	हृदय रोग16

क्रीडा बस्ति नामक वाजीकरण में बस्ति को श्रेष्ठ रेतो बलकर कहा है।

क्रीडा बस्ति- सूअर, बकरे, वृष के अण्डकोष अथवा गौरेया, केकड़ा आदि के मांस को दूध में पकाकर इसी में बकरे का वीर्य भी मिला दे। इसी में घृत, मधु, शर्करा तथा थोड़ा-सा लवण मिलाकर बस्ति देने से पुरूष सैकड़ो स्त्रियों के साथ रमण कर सकता हैं ।[17]

कृष्ण, श्वेत एवं कृष्ण श्वेत भेद से पिण्डीतक मदन फल तीन प्रकार का माना है। मदन फल को सर्व प्रकार के शोधनार्थ उपयुक्त बताया है।[18]

बस्ति कर्म के पश्चात यावागू पान का निषेध किया है।[19]

प्रत्येक 4 माह के अंतराल पर एक बार बस्ति का प्रयोग करने वाला व्यक्ति सर्व रोगों पर विजय प्राप्त कर लेता है ऐसा आचार्य भेल ने कहा है।[20]

जठराग्नि का प्रमाण-[21]

स्थूल काय प्राणियों- यव प्रमाण
हृस्वकाय प्राणियों- त्रुटि प्रमाण
कृमि, कीट, पतंगों- वायु मात्र प्रमाण

जनपदोघ्वंस का जनपदविभक्तियम अध्याय के अंतर्गत जनमार शब्द से वर्णन किया।

ऋतुव्यापत्तिजन्य महामारियां- जब ऋतु विपर्यय के कारण वर्षा ऋतु में वर्षा नहीं होती,किन्तु हेमन्त में खूब वर्षा होती है तब जनमार सर्वत्र फेलता हैं ।

महामारियों की चिकित्सा- जनमार फैलने पर व्यक्ति को उपवासरत,घृतिमान होकर रहना चाहिये। मन्त्रो एवं औषधियों के उपयोग के साथ ही ब्राह्मण के अभिवादन में भी रत रहना चाहिए ऐसा करके ही जनमार से बचा जा सकता हैं ।

असात्म्य गन्ध जन्य रोग- जब वायु प्रवाह के साथ असात्म्य गन्ध का प्रभाव होता है तो उसके कारण मनुष्य में प्रतिश्याय होना तो सामान्य बात होती है। किंतु कभी-कभी इस असात्म्य गन्ध से बातालिका नाम की व्याधि उत्पन्न होती हैं । इस रोग मे फोड़े मनुष्य के कक्षा, वंक्षण, हथेलियों पगतलियों, कंठ कर्णमूल तथा हृदय आदि स्थानों में उत्पन्न हो जाते हैं। इन फोड़ो को तुरंत ही शांत करना चाहिए अन्यथा यह बढ़ने पर रोगी को मार देते हैं।[22]

अपतन्त्रक रोग की चिकित्सा में शूकनाशक घृत का प्रयोग शूकनाशक घृत- शुकनासा, महावल्ली, दोनों बृहती, सोंठ, वेत, भारंगी, श्रावणी, कालिका तथा पुनर्नवा इनमें से प्रत्येक को अक्ष प्रमाण में लेकर एक आढक पानी तथा एक प्रस्थ घृत में डालकर सिद्ध कर पिलाना चाहिए।[23]

भेल पित्त और कफ को भी आधारणीय वेगो में गिनते हैं। पित्त और कफ के वेग को धारण करने से त्वग दोष, ज्वर, शोफ एवं छर्दि की उत्पत्ति होती है।[24]

रक्त संवहन का विशद विवेचन भेल संहिता में मिलता है।

"हृदो रसो निःसरति तस्मादेति च सर्वशः।

सिराभिर्हृदयं वैति तस्मात्तत्प्रभवाः सिराः॥" - भेल.सूत्र.20/3

हृदय से रस संवहन का कार्य चलता है। सिराये हृदय से निकलती हैं और रस का संवहन करती हैं सिराओं द्वारा रस हृदय में आता है अतः उन्हें हृदय प्रभवा कहा जाता है।

शरीर का पोषण- जल को महारस तथा अन्न को महौषध कहा हैं। इन दोनों का संयोग शरीर में ऊष्मा तथा ऊर्जा उत्पन्न करता है। सभी रस जल से ही उत्पन्न होते है और अन्न मनुष्य की सबसे बड़ी जीविका हैं। अन्न विक्लिन्न होकर शरीर में चयापचय क्रिया करता है।[25]

वात दोष में बृंहण औषधि देनी चाहिए, पित्तदोष में शोधनार्थ औषधि तथा कफ दोष कुपित हो रहा हो तब प्रच्छर्दन औषधि का प्रयोग उचित होता है। जब तीनों दोष एक साथ प्रकुपित हो रहे हो तब उसमें विरेचन देना चाहिए।[26]

आज से सहस्त्रो वर्ष पूर्व भेल ने मन का स्थान शिर और तालु के अंतर्गत लिखा है।[27] मन सभी इंद्रियों में प्रधान है तथा उसका निवास शिर एवं तालु के बीच में बताया है वहां स्थित होकर मन ज्ञानेन्द्रियो के विषयों को अच्छी प्रकार से ग्रहण करता है तथा रसादि को जानता है यह मन- मन, बुद्धि एवं चित्त इन तीनों भावों को प्राप्त होता रहता है। संपूर्ण इंद्रियों के बल का उत्पादन मन से ही होता है। हृदय में स्थित चित्त सभी प्रकार की बुद्धियों का कारण है अन्य प्रकार की क्रियाओं का भी कारण चित्त ही है क्योंकि सूचित्त वाले व्यक्ति श्रेष्ठ मार्ग पर चलकर उन्नति प्राप्त करते हैं जबकि दुश्चित्त व्यक्ति बुरे मार्ग पर चलकर पतन को प्राप्त होते हैं।

प्रत्येक ऋतु के अनुसार मैथुन का निर्देश किया है- [18]

हेमन्त	प्रत्येक 5 दिन के पश्चात
शिशिर	प्रत्येक 7 दिन के पश्चात
वर्षा	प्रत्येक 9 रात्रि के पश्चात
शरद	प्रत्येक 10 रात्रि के पश्चात
वसंत	प्रत्येक 15 रात्रि के पश्चात
ग्रीष्म	प्रत्येक 1 मास के पश्चात

ग्रीष्म ऋतु के उत्तरार्ध के महीने में मैथुन नहीं करना चाहिए क्योंकि अधिक गर्मी के कारण शरीर का बल क्षीण होता है। उचित प्रमाण में मैथुन करने पर शरीर में बुढ़ापा देर से आता है। आयु बढ़ती हैं, कान्ति में निखार आता है,किन्तु जो स्त्री प्रसंग मे असंयत रहते हैं,उनको शूल,कास,ज्वर,श्वास,कृशता,पाण्डु,क्षय तथा आक्षेपकादि रोग होते है।

सामग्री एवं विधि-

- भेल संहिता एवं इस ग्रंथ पर आधारित अन्य आयुर्वेदीय पत्रिकायें ।
- शोध साहित्य के साथ-साथ इंटरनेट पर उपलब्ध सम्बंधित साहित्य का अध्ययन ।
- आलेख प्रबंध में सैद्धांतिक, विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग ।

निष्कर्ष-

भेल संहिता में वर्णित अभीष्ट विषय अति उत्तम हैं तथा व्यवहारिक प्रयोग में इस संहिता के विचारों को भी सम्मिलित करना चाहिए। भेल संहिता के अज्ञात पहलुओं को वर्तमान समय में उजागर कर सकें जिससे भेल संहिता के अस्तित्व को नष्ट होने से बचाया जा सके। उपरोक्त भेल संहिता में वर्णित मुख्य विशेषताओं के आधार पर ज्ञात होता है कि भेल संहिता में कुछ ऐसे विषयों का भी वर्णन मिलता है जो चरक संहिता के समतुल्य विषयों में समानता रखते हैं जिससे इस संहिता का भी सिद्धान्तिक रूप तथा प्रायोगिक रूप का महत्व वर्तमान समय मे स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची-

1. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सूत्र 8/19- 20- 21- 22 पेज न.48
2. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा 10/63-64 पेज न.369
3. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।सूत्र-27/2-3-4 पेज न. 131
4. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।सूत्र-27/29- 30 पेज न. 135
5. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।सूत्र-14/16-17पेज न.81
6. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-1/14-15-16 पेज न. 289
7. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।चिकित्सा-24/44-45 पेज न.458
8. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।शारीर स्थान-8/8 पेज न. 240
9. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-4 पेज न. 314
10. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।चिकित्सा-4 पेज न.316-317
11. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-5 पेज न. 322-323
12. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-10 पेज न. 370
13. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-13 पेज न. 384
14. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।चिकित्सा-16 पेज न. 408

15. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-17 पेज न. 419
16. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-21 पेज न. 425-425
17. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सिद्धि-8 पेज न. 579
18. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। कल्प-1 पेज. 491
19. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सिद्धि-5 पेज न.551
20. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सिद्धि-6 पेज न.559
21. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। शारीर स्थान-4 पेज न. 214
22. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सूत्र-13 पेज न.76-77
23. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-26 पेज न.467
24. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी।सूत्र-6/5 पेज न. 21
25. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सूत्र-20/3 पेज न. 101-102
26. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सूत्र-25/6 पेज न. 117
27. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। चिकित्सा-8 पेज न.347
28. भेल संहिता विनोदनी हिन्दी व्याख्या, श्री अभय कात्यायन चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। सूत्र-7 पेज न.41

○